

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	हितिक	हितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्जे	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्जाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्ध	सद्गन्ध	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़स	सज़स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्र	उज़्र	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्की	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस	हिंस	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रन	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अधुव	अधुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काफी	काफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाया	करणाया	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्यां	ध्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कटू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्यार	अख्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्पवास	उत्पवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	ल्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इवेंट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह धुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह धुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो

से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

pg 7/18

pg 8/18

पपट! पवट?	पपज्ञ! पवज्ञ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदू! पवदू?	पपव-वपव	पपलृ-लृपव	पपल्ल-ल्लपव
पपठ! पवठ?		पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदृ! पवदृ?	पपश-शपव		पपल्ल-ल्लपव
पपड! पवड?	पपअ! पवअ?	पपट्ट! पवट्ट?		पपष-षपव	पपइ-इपव	पपल्ल-ल्लपव
पपढ! पवढ?	पपऐ! पवऐ?	पपट्ट! पवट्ट?	-	पपस-सपव	पपछ-छपव	पपल्ल-ल्लपव
पपण! पवण?	पपऑ! पवऑ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपह-हपव	पपट्ट-ट्टपव	
पपत! पवत?	पपइ! पवइ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपख-खपव	पपक-कपव	पपट्ट-ट्टपव	पपहु-हुपव
पपथ! पवथ?	पपई! पवई?	पपड्ड! पवड्ड?	पपग-गपव	पपख-खपव	पपट्ट-ट्टपव	पपहु-हुपव
पपद! पवद?	पपउ! पवउ?	पपड्ड! पवड्ड?	पपघ-घपव	पपग-गपव	पपट्ट-ट्टपव	पपह-हपव
पपध! पवध?	पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपङ-ङपव	पपज-जपव	पपट्ट-ट्टपव	पपह-हपव
पपन! पवन?	पपए! पवए?	पपद्ग! पवद्ग?	पपच-चपव	पपङ-ङपव	पपट्ट-ट्टपव	पपहु-हुपव
पपप! पवप?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपछ-छपव	पपढ-ढपव	पपट्ट-ट्टपव	पपहु-हुपव
पपफ! पवफ?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपफ-फपव	पपह-हपव	पपहु-हुपव
पपब! पवब?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपझ-झपव	पपय-यपव	पपल्ल-ल्लपव	पपरु-रुपव
पपभ! पवभ?	पपआ! पवआ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपञ-ञपव	पपक्ष-क्षपव		पपरु-रुपव
पपम! पवम?	पपओ! पवओ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपट-टपव	पपझ-झपव	पपक्त-क्तपव	पपदु-दुपव
पपय! पवय?	पपऔ! पवऔ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपठ-ठपव		पपङ्ग-ङ्गपव	पपदू-दूपव
पपर! पवर?	पपक्र! पवक्र?	पपष्ट! पवष्ट?	पपङ-ङपव	पपअ-अपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपदृ-दृपव
पपल! पवल?	पपक्र! पवक्र?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपअ-अपव	पपट्ट-ट्टपव	-
पपळ! पवळ?	पपलृ! पवलृ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपण-णपव	पपअ-अपव	पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"
पपव! पवव?	पपलृ! पवलृ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपत-तपव	पपइ-इपव	पपट्ट-ट्टपव	"खपवपख"
पपश! पवश?		पपल्ल! पवल्ल?	पपथ-थपव	पपई-ईपव	पपड्ड-ड्डपव	"गपवपग"
पपष! पवष?	पपइ! पवइ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपद-दपव	पपउ-उपव	पपड्ड-ड्डपव	"घपवपघ"
पपस! पवस?	पपछ! पवछ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपध-धपव	पपऊ-ऊपव	पपड्ड-ड्डपव	"ङपवपङ"
पपह! पवह?	पपट्ट! पवट्ट?	पपल्ल! पवल्ल?	पपन-नपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्धपव	"चपवपच"
पपक्र! पवक्र?	पपट्ट! पवट्ट?	पपहु! पवहु?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"
पपख! पवख?	पपट्ट! पवट्ट?	पपहु! पवहु?	पपफ-फपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ध-द्धपव	"जपवपज"
पपग! पवग?	पपइ! पवइ?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ध-द्धपव	"झपवपझ"
पपज! पवज?	पपट्ट! पवट्ट?	पपहु! पवहु?	पपभ-भपव	पपआ-आपव	पपद्ध-द्धपव	"ञपवपञ"
पपङ! पवङ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपहु! पवहु?	पपम-मपव	पपओ-ओपव	पपद्ध-द्धपव	"टपवपट"
पपढ! पवढ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपहु! पवहु?	पपय-यपव	पपऔ-औपव	पपद्ग-द्गपव	"ठपवपठ"
पपफ! पवफ?	पपह! पवह?	पपरु! पवरु?	पपर-रपव	पपक्र-क्रपव	पपष्ट-ष्टपव	"डपवपड"
पपय! पवय?	पपल्ल! पवल्ल?	पपरु! पवरु?	पपल-लपव	पपक्र-क्रपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपक्ष! पवक्ष?		पपदु! पवदु?	पपळ-ळपव	पपलृ-लृपव	पपष्ट-ष्टपव	"णपवपण"
	पपक्त! पवक्त?				पपष्ट-ष्टपव	

"तपवपत"	"इपवपइ"	"डुपवपडु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपळिपपळिंपपळिंपप
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"डुपवपडु"	पवप ११०१ वपव	पपकिपपकिंपपकिंपप	पपविपपविंपपविंपप
"दपवपद"	"उपवपउ"	"डुपवपडु"	पवप १२०१ वपव	पपखिपपखिंपपखिंपप	पपशिपपशिंपपशिंपप
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप १३०१ वपव	पपगिपपगिंपपगिंपप	पपषिपपषिंपपषिंपप
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्वपवपद्व"	पवप १४०१ वपव	पपघिपपघिंपपघिंपप	पपसिपपसिंपपसिंपप
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप १५०१ वपव	पपडिपपडिंपपडिंपप	पपहिपपहिंपपहिंपप
"फपवपफ"	"ऐपवपऐवव"	"द्वपवपद्व"	पवप १६०१ वपव	पपचिपपचिंपपचिंपप	पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप
"बपवपब"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप १७०१ वपव	पपछिपपछिंपपछिंपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपज्ञिंपप
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्वपवपद्व"	पवप १८०१ वपव	पपजिपपजिंपपजिंपप	
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्वपवपद्व"	पवप १९०१ वपव	पपझिपपझिंपपझिंपप	
"यपवपय"	"औपवपऔ"	"द्वपवपद्व"		पपजिपपजिंपपजिंपप	
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"द्वपवपद्व"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपटिंपप	
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"द्वपवपद्व"	००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपठिंपप	
"ळपवपळ"	"लृपवपलृ"	"द्वपवपद्व"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपडिंपप	
"वपवपव"	"लृपवपलृ"	"द्वपवपद्व"	००३,०१०,३११	पपढिपपढिंपपढिंपप	
"शपवपश"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपणिंपप	
"षपवपष"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपतिंपप	
"सपवपस"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपथिंपप	
"हपवपह"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपदिंपप	
"कपवपक"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपधिंपप	
"खपवपख"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपनिंपप	
"गपवपग"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"		पपपिपपपिंपपपिंपप	
"जपवपज"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	०००,०१०,०११	पपफिपपफिंपपफिंपप	
"ङपवपङ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००१,०१०,१११	पपबिपपबिंपपबिंपप	
"ढपवपढ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००२,०१०,२११	पपभिपपभिंपपभिंपप	
"फ़पवपफ़"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००३,०१०,३११	पपमिपपमिंपपमिंपप	
"य़पवपय़"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००४,०१०,४११	पपयिपपयिंपपयिंपप	
"क्षपवपक्ष"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००५,०१०,५११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"ज्ञपवपज्ञ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००६,०१०,६११	पपलिपपलिंपपलिंपप	
	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००७,०१०,७११		
"अपवपअ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००८,०१०,८११		
"ओपवपओ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"	००९,०१०,९११		
"ऑपवपऑ"	"डुपवपडु"	"द्वपवपद्व"			

pg 12/18

pg 13/18

पपध्कपपछ्खपपघापपघ्यपपघ्हपपघ्यप
 पछ्छपपघ्जपपघ्झपपघ्जपपघ्टपपघ्ठपपघ्हप
 पघ्हपपघ्णापपघ्त्तपपघ्थपपघ्दपपघ्धपपघ्नप
 पघ्नपपघ्मपपघ्फपपघ्बपपघ्भपपघ्मपपघ्यप
 पघ्नपपघ्रपपघ्लपपघळपपघळपपघ्वप
 पघ्शपपघ्षपपघ्सपपघ्हपपघ्क्कपपघ्छपपघ्चाप
 पघ्जपपघ्हपपघ्हपपघ्फपपघ्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप
पइछपपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप
पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप
पइपपपइरपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप
पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप
पइङपपइढपपइफपपइयपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप
पड्छपपड्जपपड्झपपड्झपपड्ठपपड्ठपपड्ठप
पड्ठपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णप
पड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णप
पड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णप
पड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णप
पड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णप
पड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णपपड्णप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप
पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्झपपढ्ठपपढ्ठपपढ्डप
पढ्ढपपढ्णपपढ्ढपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप
पढ्न्पपढ्पपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप
पढ्द्रपपढ्द्लपपढ्ळपपढ्ळपपढ्वपपढ्शप
पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्क्रपपढ्खपपढ्गपपढ्जप
पढ्ङपपढ्ढपपढ्फपपढ्घपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चप
पण्छपपण्जपपण्झपपण्झपपण्ठपपण्ठपपण्डप
पण्ढपपण्णपपण्ढपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप
पण्न्पपण्पपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्यप
पण्द्रपपण्द्लपपण्ळपपण्ळपपण्वपपण्शप
पण्षपपण्सपपण्हपपण्क्रपपण्खपपण्गपपण्जप
पण्ङपपण्ढपपण्फपपण्घपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्झपपत्ठपपत्ठपपत्डपपत्डपपत्गप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्तपपत्पपत्फप
पत्बपपत्भपपत्मपपत्त्यपपत्त्रपपत्त्पपत्लपपत्ळप
पत्ळपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्क्रपपत्खप
पत्गपपत्जपपत्ङपपत्ढपपत्फपपत्घपप

पपथ्कपपथ्खपपथापपथ्घपपथ्ङपपथ्चपपथ्छप
पथ्जपपथ्झपपथ्झपपथ्ठपपथ्ठपपथ्डपपथ्डप
पथ्णपपथ्णपपथ्थपपथ्दपपथ्धपपथ्नपपथ्न्प
पथ्पपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्मपपथ्मप
पथ्द्रपपथ्द्लपपथ्ळपपथ्ळपपथ्वपपथ्शपपथ्षप
पथ्सपपथ्हपपथ्क्रपपथ्खपपथापपथ्जपपथ्ङप
पथ्ढपपथ्फपपथ्घपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चप
पद्छपपद्जपपद्झपपद्झपपद्ठपपद्ठपपद्डप
पद्डपपद्ढपपद्णपपद्ढपपद्थपपद्दपपद्धप
पद्नपपद्न्पपद्पपपद्फपपद्बपपद्भपपद्मप
पद्घपपद्द्रपपद्द्लपपद्ळपपद्ळपपद्वपपद्शप
पद्षपपद्सपपद्हपपद्क्रपपद्खपपद्गपपद्जप
पद्ङपपद्ढपपद्फपपद्घपप

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्घपपध्ङपपध्चप
पध्छपपध्जपपध्झपपध्झपपध्ठपपध्ठपपध्डप
पध्ढपपध्णपपध्ढपपध्थपपध्दपपध्धपपध्नप
पध्न्पपध्पपध्फपपध्बपपध्भपपध्मपपध्मप
पध्द्रपपध्द्लपपध्ळपपध्ळपपध्वपपध्शप
पध्षपपध्सपपध्हपपध्क्रपपध्खपपध्गपपध्जप
पध्ङपपध्ढपपध्फपपध्घपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्झपपन्ठपपन्ठपपन्डपपन्डप
पन्गपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्न्प
पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्त्यपपन्त्रपपन्त्प
पन्लपपन्लपपन्त्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हप
पन्क्रपपन्खपपन्गपपन्जपपन्ङपपन्ढप
पन्फपपन्घपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्झपपत्ठपपत्ठपपत्डपपत्डप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्तपपत्पपत्फप
पत्बपपत्भपपत्मपपत्त्यपपत्त्रपपत्त्पपत्लप
पत्ळपपत्ळपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हप
पत्क्रपपत्खपपत्गपपत्जपपत्ङपपत्ढप
पत्फपपत्घपप

पपप्कपपप्खपपप्गपपप्घपपप्ङपपप्चपपप्छप
पप्जपपप्झपपप्झपपप्ठपपप्ठपपप्डपपप्डप
पप्तपपप्थपपप्दपपप्धपपप्नपपप्त्पपप्लप
पप्ळपपप्ळपपप्त्वपपप्शपपप्षपपप्सपपप्हप
पप्क्रपपप्खपपप्गपपप्जपपप्ङप
पप्ढपपप्फपपप्घपप

पपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्घपपफ्ङपपफ्चप
पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्झपपफ्ठपपफ्ठप
पफ्डपपफ्णपपफ्णपपफ्थपपफ्दपपफ्धप
पफ्नपपफ्न्पपफ्पपफ्फपपफ्बपपफ्भप
पफ्मपपफ्मपपफ्मपपफ्मप
पफ्द्रपपफ्द्लपपफ्ळपपफ्ळप
पफ्वपपफ्शपपफ्षपपफ्सप
पफ्हपपफ्क्रपपफ्खपपफ्गप
पफ्जपपफ्ङप
पफ्ढपपफ्फपपफ्घपप

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्ङपपक्चप
पक्छपपक्जपपक्झपपक्झपपक्ठपपक्ठप
पक्डपपक्णपपक्णपपक्थपपक्दपपक्धप
पक्नपपक्न्पपक्पपक्फपपक्बप
पक्भपपक्मपपक्मप
पक्द्रपपक्द्लपपक्ळप
पक्ळपपक्वपपक्शप
पक्षपपक्सपपक्हप
पक्क्रपपक्खप
पक्गपपक्जप
पक्ङप
पक्ढप
पक्फप
पक्घपप

पपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्घपपभ्ङपपभ्चप
पभ्छपपभ्जपपभ्झपपभ्झप
पभ्ठपपभ्ठपपभ्डपपभ्डप
पभ्णपपभ्णपपभ्थप
पभ्दपपभ्धप
पभ्नपपभ्न्प
पभ्पपपभ्फप
पभ्बपपभ्भप
पभ्मपपभ्मप
पभ्मपपभ्मप
पभ्द्रपपभ्द्लप
पभ्ळपपभ्ळप
पभ्वपपभ्शप
पभ्षप
पभ्सप
पभ्हप
पभ्क्रप
पभ्खप
पभ्गप
पभ्जप
पभ्ङप
पभ्ढप
पभ्फप
पभ्घपप

पपक्कपपखपपगपपघपपङ्गपपचपपछप
पजपपझपपञपपटपपठपपडपपढपपणप
पत्तपपथपपदपपधपपनपपन्नपपमपपम्प
पबपपभपपमपपयपपरूपपरूपपत्तपपळप
पळपपवपपशपपषपपसपपहपपक्कपपखप
पगपपजपपङ्गपपडपपढपपम्पपप

पपक्कपपखपपवापपथपपळपपव्यपपळप
 पजपपझपपजपपळपपळपपळपपळपपवाप
 पत्तपपथपपत्तपपथपपत्तपपत्तपपव्यपपत्तप
 पळपपथपपव्यपपव्यपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तप
 पळपपव्यपपव्यपपव्यपपव्यपपव्यपपव्यप
 पत्तपपवापपजपपळपपळपपत्तपपव्यपप

पपट्कपपट्खपपट्हापपट्थपपट्ठपपट्चपपट्छप
पट्जपपट्झपपट्जपपट्टपपट्ठपपट्ठपपट्ठप
पल्लपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठप
पट्फपपट्फपपट्फपपट्फपपट्फपपट्फपपट्फप
पट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठप
पट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठप
पट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठप
पट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठपपट्ठप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
 पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
 पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्मप
 पश्फपपश्बपपश्भपपश्मपप पश्यपपश्लप
 पश्ळपपश्मपवपपश्शपप पश्षपपश्सपपश्हपप

पपक्षपपक्ष्वपपक्ष्वापपक्ष्वपपक्ष्वपपक्ष्वप
 पक्षजपपक्षझपपक्षञपपक्षटपपक्षठपपक्षडपपक्षढप
 पक्षणपपक्षतपपक्षथपपक्षदपपक्षधपपक्षनपपक्षमप
 पक्षफपपक्षबपपक्षभपपक्षमपप पक्ष्यपपक्षलप
 पक्षळपपक्षमपवपपक्षशपप पक्षषपपक्षसपपक्षहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठपपक्कडपपक्कढप
 पक्कणपपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधपपक्कनपपक्कमप
 पक्कफपपक्कबपपक्कभपपक्कमपप पक्क्यपपक्कलप
 वपपक्कशपप पक्कषपपक्कसपपक्कहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठपपक्कडपपक्कढप
 पक्कणपपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधपपक्कनपपक्कमप
 पक्कफपपक्कबपपक्कभपपक्कमपप पक्क्यपपक्कलप
 पक्कशपप पक्कषपपक्कसपपक्कहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठप
 पक्कडपपक्कढपपक्कणपपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधप
 पक्कनपपक्कमपपक्कफपपक्कबपपक्कभपपक्कमप
 पक्कयपपक्कलपपक्कळपपक्कमपवपपक्कशपप
 पक्कषपपक्कसपपक्कहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कजपपक्कझपपक्कञपपक्कटपपक्कठपपक्कडपपक्कढप
 पक्कणपपक्कतपपक्कथपपक्कदपपक्कधपपक्कनपपक्कमप
 पक्कफपपक्कबपपक्कभपपक्कमप पक्क्यपपक्कलप
 पक्कशपप पक्कषपपक्कसपपक्कहपप